C-11 Guidance & Counselling.

TEACHER TRANING COLLEGE

निष्पत्ति एवं निदानात्मक परीक्षण

Achievement & Diagnostic Tests.

शिक्षा निर्देशन में निष्पत्ति एवं निदानात्मक परीक्षणों का विशेष महत्व होती है। निष्पत्ति परीक्षणों के आधार पर छात्र की पाठ्यलब्धियों के सम्बन्ध में जानकारी होती है कि वह किन विषयों में कमजोर है, जिनमें सुधारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है। विषय में छात्र की कमजोरियों का कारण निदानात्मक परीक्षणों से निहित होता है। दोनों परीक्षणों के कार्य पूरक हैं - निष्पत्ति परीक्षण द्वारा छात्र की पाठ्यलब्धियों के स्तर का बोध होता है और कमजोर छात्रों को निदानात्मक परीक्षण देकर उनकी कमजोरियों के कारण का पता लगाया जाता है। इन कमजोरियों के उपचार हेतु सुधारात्मक अनुदेशन तथा शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। छात्रों की पाठ्यलब्धियों द्वारा अगली कक्षा में किन विषयों को लिया जाए, इसके लिए निर्देशन दिया जाता है। शैक्षिक पाठ्यलब्धियाँ, छात्र की बुद्धि स्तर, अभिरुचियों तथा अभिवृत्तियों पर निर्भर करती है, परन्तु विशिष्ट निर्देशन में छात्रों की निष्पत्तियों का विशेष महत्व है, शिक्षा मापन के अन्तर्गत इस प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।

1) निष्पत्ति परीक्षण (Achievement Test)

2) निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test)

Phone/Email/Notes
Notes

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

निष्पत्ति परीक्षण
(Achievement Tests)

शिक्षा मापन में निष्पत्ति परीक्षणों का विशेष महत्व है। निष्पत्ति परीक्षणों का प्रयोग सभी प्रकार की शैक्षिक संस्थाओं में किया जाता है। निष्पत्ति परीक्षणों के द्वारा यह मापन किया जाता है कि छात्रों ने कक्षा में पढ़ाये गये विषयों की पाठ्यवस्तु के सम्बन्ध में कितना सीखा है। इस प्रकार के परीक्षणों में सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु पर प्रश्न पूछे जाते हैं। और सही उत्तरों के लिए अंक देकर उनका योग कर लिया जाता है। जिसे प्राप्तांक कहते हैं। इस प्रकार निष्पत्ति परीक्षण में पाठ्यवस्तु के सीखने को विशेष महत्व दिया जाता है। आधुनिक युग में निष्पत्ति परीक्षण में पाठ्यवस्तु का स्थान गौण हो गया है, क्योंकि शिक्षण के द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति करते हैं। अतः पाठ्यवस्तु उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक साधन होता है। साध्य नहीं। इस प्रकार निष्पत्ति परीक्षणों को अब मानदण्ड परीक्षण कहते हैं। निष्पत्ति परीक्षण से मानदण्ड परीक्षण अधिक उपयोगी होते हैं। क्योंकि मानदण्ड परीक्षा से छात्रों के वास्तविक विकास के स्तर का बोध होता है। जैसे दो छात्रों ने समान अंक प्राप्त किए एक ने पाठ्यवस्तु को रटकर के और दूसरे ने पाठ्यवस्तु को बोधगम्य करके। दोनों के समान अंक होने पर भी दूसरा छात्र पहले से उत्तम है, या अच्छा है।

CH
6 13 20 27
7 14 21 28
8 15 22 29
9 16 23 30
10 17 24 31
11 18 25
12 19 26
Phone/Email/Notes
Notes

Scanned with CamScanner

[illegible] शिक्षण [illegible] कहते हैं?

[illegible] में [illegible] क्षमताओं एवं अभिप्रेरणा [illegible] को [illegible] कहते हैं। विपरीत [illegible] शैक्षिक [illegible] की प्राप्ति [illegible] विपरीत परिस्थितियों की [illegible] (ज्ञान) [illegible] को [illegible] दो भागों में विभाजित [illegible]

1) [illegible] शैक्षिक उपलब्धि

2) [illegible] शैक्षिक उपलब्धि

[illegible] शैक्षिक उपलब्धि के विषय में [illegible] उपलब्धियों के बारे में [illegible] के [illegible] निर्धारित किया है। ज्ञान, बोध [illegible] संश्लेषण एवं मूल्यांकन। [illegible] ज्ञान के [illegible] की परिभाषा की है—

1) [illegible] अनुभवों की प्राप्ति

2) [illegible] एवं सिद्धान्तों का परिभाषीकरण

3) [illegible] पक्ष में समझने की क्रिया तथा [illegible]

4) समाज एवं सभ्यता द्वारा संचित सूचनाएँ [illegible] का व्यवहार शिक्षा संस्थाओं का कार्य है।

[illegible] का प्रमुख उद्देश्य बालक का [illegible] विकास करना और [illegible] पर स्वाभाविक [illegible] है। सभी शिक्षाओं की ज्ञान [illegible] में [illegible] का विवेचन किया जाता है।

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

(2) अन्य शैक्षिक उपलब्धि → अन्य शैक्षिक उपलब्धियों का सम्बन्ध भावात्मक एवं क्रियात्मक उद्देश्यों से होता है। भावात्मक उद्देश्यों का सम्बन्ध बालकों की अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं रुचियों/गुणों के विकास से होता है। भावात्मक उद्देश्यों को छः वर्गों में विभाजित किया गया है। आग्रहण, प्रतिक्रिया, अनुमूल्यन, विचारण, व्यवस्थापन तथा चारित्रिकरण। बालक के चारित्रिक गुणों का विकास भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति पर आधारित होता है।

( ) क्रियात्मक उद्देश्यों का सम्बन्ध बालक के लिखने, पढ़ने, बोलने तथा ज्ञान के प्रयोग के कौशलों से होता है। क्रियात्मक उद्देश्यों को भी छः वर्गों में बाँटा गया है - उत्तेजना, कार्यनिर्धारण, समायोजन, स्वाभावीकरण और स्वभाव का निर्माण। बालकों में अच्छी आदतों का निर्माण या विकास क्रियात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति पर निर्भर होता है। इन दोनों प्रकार की शैक्षिक उपलब्धियों को अन्य शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। जिसमें बालक के निम्नलिखित गुण सम्मिलित किए जाते हैं।

(अ) चिन्तन में लचीलापन
(ब) निर्णय में सन्तुलन
(स) आलोचनात्मक निरीक्षण
(द) संश्लेषण की क्षमताएं
(य) सांस्कृतिक बोध एवं चयन की क्षमताएँ, तथा
(र) शैक्षिक क्षमताएं।

03 / 18 Saturday / Wk-12/Day (077-288)

निष्पत्ति परीक्षणों का उपयोग :

निष्पत्ति परीक्षण का उपयोग साधारणतः शिक्षा उद्योग, सार्वजनिक सेवाओं, सेना, निर्देशन तथा परामर्श आदि क्षेत्रों में किया जाता है। इन परीक्षणों का उपयोग प्रमुख रूप से निम्नलिखित कार्यों में किया जाता है।

1) अनुस्थितियाँ अथवा श्रेणी प्रदान करना
2) अगली कक्षा में पदोन्नति
3) विभिन्न सेवाओं में चयन
4) सेवाओं में पदोन्नति के लिए
5) छात्रों का वर्गीकरण
6) शिक्षा निर्देशन
7) शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता, तथा
8) व्यावसायिक निर्देशन

1) अनुस्थितियाँ अथवा श्रेणी प्रदान करना :

निष्पत्ति परीक्षण का प्रमुख कार्य यह है कि छात्रों को पास और फेल दो वर्गों में विभाजित करना और पास हुए छात्रों को श्रेणी प्रदान करना। छात्रों के प्राप्तांकों या प्रतिशत के आधार पर उन्हें

Sunday

Mail/Notes

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

2) अगली कक्षा में पदोन्नति → जो छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हैं वो अगली कक्षा के लिए सक्षम समझे जाते हैं, और अगली कक्षा में प्रवेश शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर किया जाता है और जो अनुत्तीर्ण होते हैं उन्हें अगली कक्षा में प्रवेश नहीं किया जाता है।

3). विभिन्न सेवाओं में चयन → विभिन्न सेवाओं के चयन में इन्हीं शैक्षिक योग्यताओं का महत्व दिया जाता है। और अच्छी योग्यता वाले अभ्यार्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। अनेक संस्थाओं ने चयन परीक्षण का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है। चयन परीक्षण में जो अधिक अंक प्राप्त करते हैं उन्हीं का चयन साक्षात्कार के लिए किया जाता है।

4) सेवाओं में पदोन्नति के लिए → अनेक संस्थाओं में पदोन्नति के लिए निष्पति परीक्षाओं का प्रयोग करते हैं जो अभ्यर्थी इन परीक्षणों में अधिक अंक प्राप्त करते हैं उनकी पदोन्नति की जाती है। विशेषकर बैंक की सेवाओं में इस प्रकार के परीक्षणों का अधिक उपयोग किया जाता है।

5. छात्रों का वर्गीकरण → निष्पति परीक्षणों का प्रयोग विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए वर्गीकरण किया जाता है। जैसे विज्ञान का पाठ्यक्रम, वाणिज्य के पाठ्यक्रम, कृषि के पाठ्यक्रम।

Phone/Email/Notes

Notes